॥ श्री ॥

चन्द्रप्रभचरित

CHANDRAPRABHACHARITA

आ. वीरनन्दि · १०वीं शती · अभिलेख ४१/९०

श्री वसुनन्दि-1 → **आ. वीरनन्दि** → श्री रत्ननन्दि

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वीरनन्दि कृत संस्कृत महाकाव्य — आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का चरित; प्रौढ़ काव्य-शैली के लिये संस्कृत परम्परा में समादृत।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

चन्द्रप्रभचरित — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ४१ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वीरनन्दि; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १०५) के अनुसार इनका समय ६०९–६३९ है तथा गुरु श्री वसुनन्दि-१। समकालीन ग्रन्थों में प्रद्युम्नचरित, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत, गोम्मटसार जीवकाण्ड परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

प्रद्युम्नचरित · गद्यचिन्तामणि · क्षत्रचूड़ामणि · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत · गोम्मटसार जीवकाण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ४१ — मूल छायाचित्र